पंचम अध्याय

साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित सांस्कृतिक चेतना

पंचम अध्याय

साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित सांस्कृतिक चेतना

भूमिका

प्रस्तुत अध्याय में राष्ट्रीय चेतना के पश्चात् सांस्कृतिक चेतना का उन्मेष विवेच्य नाटकों में किस तरह प्रतिबिंबित है यह दिखाना हमारा प्रमुख उद्दिष्ट है। साथ ही साथ सांस्कृतिक विघटन की ओर भी संकेत करना हमें अभिप्रेत है।

संस्कृति-स्वरूप

"संस्कृति" शब्द संस्कृत का "कृ" धातु को "सम" उपसर्ग और "क्तिन" प्रत्यय जोडने से व्युत्पन्न होते हैं, जिसका अर्थ है परिष्कार, तैयारी, मनोविकास। अंग्रेजी के "कल्चर" शब्द का पर्यायी "संस्कृति" है। रामखेलावन पांडेय ने कहा है "अलंकृत सम्यक कृति अथवा चेष्टा" तो पर्यायवाची वैदिक शब्द "कृष्टि" है जिसका तात्पर्य "कृषि कर्म"।

डॉ.राधाकृष्णन के मनातुसार, "संस्कृति-विवेक बुध्दि का जीवन को भले प्रकार जान लेने का नाम है।"[1] नेमिचंद्र जैन का कथन है "संस्कृति मनुष्य के अवकाश के क्षणों की उपज है। जीवन यापन के संघर्ष में विजयी होकर अथवा उसकी तीव्रता कमी होने से कुछ चैन मिलने पर ही मानव उन भौतिक और अध्यात्मिक मूल्यों की सृष्टि करता है, जिनकी समग्रता का नाम संस्कृति है।"[2] महादेवी वर्मा के शब्दों में - "संस्कृति शब्द में हमें जिसका बोध होता है वह वस्तुतः ऐसी जीवन पध्दति है जो एक विशेष प्राकृतिक परिवेश में मानव निर्मित परिवेश संभव कर देती है और दोनों परिवेशों की संगति में स्वयं अविष्कृत होती रहती है।"[3] एम्.जे.हर्सकोविट्स के अनुसार, संस्कृति मानव व्यवहार का सीखा हुआ अंश है। मेकाश्वर तथा पेज का मंतव्य है, संस्कृति हमारे रहनसहन और विचारों के तरीकों में हमारी प्रवृत्ति की अभिव्यक्ति है जिसमें हमारा दैनिक व्यवहार, कला, साहित्य,

धर्म, मनोरंजन तथा आनंद मोहित है। डॉ·गजानन सुर्वे के मतानुसार, "संस्कृति एक विशेष प्राकृतिक परिवेश में मानव की भौमिक, अभौमिक और सौंदर्यात्मक जीवन पध्दति की वह समग्र और ऐक्य मूलक अभिव्यक्ति है जिसमें मानव के परंपरागत और नवोदित उच्चतम संस्कार निहित होते हैं।"[4]

उपर्युक्त परिभाषाओं को ध्यान में रखकर संस्कृति की कई विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं -

1· संस्कृति मानव ने तैयार की परंपरागत वस्तु है।

2· उसमें मानव के जीवन मूल्यों का निर्धारण होता है।

3· मानव की संस्कार क्षमता और उन्नति उसके स्थायी भाव हैं।

4· संस्कृति के तीन महत्वपूर्ण पहलू भौतिकता, अध्यात्मिकता और सौंदर्यशीलता है।

इससे स्पष्ट होता है अपने जीवन को परिष्कृत, शुध्द और पवित्र बनाकर लक्ष्य की प्राप्ति करना ही संस्कृति है।

हिमालय का सांस्कृतिक महत्व

भारत में हिमालय का महत्वपूर्ण स्थान है। हिमालय भारत का संरक्षण कर्ता है। भारत अध्यात्मिक देश होने के कारण ऋषी-मुनी, देव-देवता तपस्या के लिए चले जाते थे। इसलिए हिमालय को भारतीय संस्कृति का प्रतिक माना जाता है।

डॉ·शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूँजती हैं" नाटक में हिमालय का सुंदर वर्णन चित्रित किया है। तेजपुर हिमालय के पास है। करतार सिंह के "स्नोव्हाइट" होटल के बरामदे से हिमालय की चोटियों का पूरा सौन्दर्य दिखाई देता है। यह हिमालय सिर्फ हिमालय न होकर पर्वतराज है। हम भारतीयों की सभ्यता और आधार शिला का प्रतीक, क्योंकि वह भरे दोपहर में भी सुशोभित दिखाई देता है। प्राचीन सभी देव-देवताएँ शांत हिमालय में तपस्या करने के लिए रहते

थे। इसलिए हिमालय को देवताओं का घर कहा है। मानों वह श्वेत गोरांग महादेव का स्वरूप ही है। सामान्य जनता के मन में हिमालय के बारे में प्रेम भावना होने के कारण आज भी यात्रा करते समय उनकी अंतरात्मा से प्रार्थना के गीत अपने आप स्फूट निकलते है।

"करवन हरब दुःख मोर हे भोलानाथ।
करवन हरब दुःख मोर।।
भन विद्यापति, भोर भोलानाथ गति।
देहु अभय वर मोहि, हे भोलानाथ।
करवन हरब दुःख मोर।।"[5]

एक समय महान होनेवाला हिमालय आज चीन के आक्रमण के कारण झुक रहा है ऐसे संवाद प्रतिनिधि विवेक को लगता है। तभी होटल में काम करनेवाला गोपाल शर्मा कहता है, हिमालय सिर्फ पहाड़ ही न होकर पहाड़ों का राजा हैं, इसलिए वह कभी झुक नहीं सकता।

स्वार्थ भावना के कारण आदमी हमेशा झगड़ते रहते हैं। उससे कोई अनुभव ग्रहण नहीं करते। यह सब सुनते ही रिपोरटर विवेक हिमालय को नजदिक से देखना चाहता है, तभी हिमालय के प्रति होनेवाला प्रेम बेयरे का काम करनेवाले गोपाल शर्मा के शब्दों में विवेक सुनता है -

"य'पहाड़ हमारे आँखों के तारे
- - - - - - - - - - -
इनको कभी ना भूल सकेंगे।।"[6]

इस प्रकार लेखक ने हिमालय का सांस्कृतिक महत्व विशद किया है।

विवेक युध्द की जगह पर घटी घटनाओं का समाचार पहुँचाने के लिए तेजपुर जल्दी ही लौट रहा था। तभी देखे हुए हिमालय की घाटियों के विचित्र रूप का वर्णन विवेक के शब्दों में देखा जा सकता है - "इन घाटियों का भी

क्या विचित्र रूप है। कभी ये ऋषियों के मन्त्रों और ऋचाओं से गूँजती है। कभी तोप और बन्दूकों की आवाजों से। कभी इनमें प्रेम के गीत और यात्रियों के भजन-कीर्तन गूँजते हैं, तो कभी प्रवंचना और विश्वास-घातकी चीत्कारें।"[7] यद्यपि हिमालय का सांस्कृतिक महत्व निर्विवाद है, फिर भी स्वातंत्र्योत्तर काल में विदेशी आक्रमणों के कारण हिमालय समरभूमि का केंद्र बन गया है और भारत की सांस्कृतिक एकता को खतरा निर्माण हुआ है।

विविध तीर्थक्षेत्र

भारत संस्कृति प्रधान देश होने के कारण वहाँ विविध तीर्थक्षेत्र दिखाई देते हैं। सभी धर्म के लोगों के अपने अपने तीर्थक्षेत्र है। जहाँ हर भारतीय नतमस्तक होते हुए दिखाई देते हैं।

डॉ.शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूँजती हैं" नाटक में हिमालय को युध्द स्थल के रूप में चित्रित किया है। हिमालय के पास होनेवाले बदरी केदार नामक तीर्थक्षेत्र की तरफ यात्री बदरी केदार का गुणगान गाते हुए चले जाते हैं। उसे सुनकर सभी मंत्र-मुग्ध हो जाते हैं। मगर वहीं धार्मिक स्थल युध्द का घटना स्थल बन गया है। आज भी 1994 में बदरी केदार की यात्रा के लिए भारतीय जाते हुए दिखाई देते हैं। इससे भारतीय आदमी के मन में होनेवाली श्रध्दा की भावना दिखाई देती है। एक समय ऐसा था कि जहाँ ऋषि-मुनि, देव-देवता, तप-साधना करने के कारण हिमालय शांत और पवित्र बन गया था वह आज विश्वासघाती चीनियों के कारण राइफल, तोपों की आवाज से जल रहा है।

धार्मिक पवित्र तीर्थक्षेत्र

राजकुमार लिखित "हाजीपीर का दर्रा" नाटक में हाजीपीर का महत्व स्पष्ट किया है। पाकिस्तान के सभी मुजाहिद श्रीनगर पर कब्जा करने के लिए हाजीपीर के दर्रे से ही शुरूआत करना चाहते हैं। हिंदुस्तान मुर्दाबाद के नारे सुनकर हाजीपीर के दर्रे का महत्व भारतीय जासूस अकबर के शब्दों में - "हाँ, यहीं से जिसका नाम हाजीपीर का दर्रा है। जहाँ हाजीपीर का मजार है जिसके सामने सर झुकाकर

लोग कभी इन्सान की भलाई के लिए दुआँ माँगते थे। जहाँ आनेवाले सिर्फ अमन और मोहब्बत का पैगाम ही सुना करते थे।"[8] पाकिस्तान के आक्रमण के कारण "हाजीपीर का दर्रा" आज एक युध्दभूमि बन गया है। उस पवित्र क्षेत्र को आज पाकिस्तान मुसलमान ठुकरा रहे हैं। जालिम साँ जैसे पाकिस्तानी सरदार प्रमुख हाजीपीर के दर्रे के मजार पर थूकता है और उसे तोड़ने की भी कोशिश करता है। यह बात निःसंदेह सांस्कृतिक दृष्टि से गलत है। विदेशियों के आक्रमण ने भारत को बहुत दुःख दिया है और हमारी सांस्कृतिक एकता को खतरे में डाल दिया है।

धर्म और विश्वास

भारत अध्यात्मिक देश है। तीर्थक्षेत्रों से भरा है। भिन्न-भिन्न प्रकार के धर्म होने के बाद भी भारतीयों के मन में धर्म के बारे में दृढ विश्वास दिखाई देता है।

डॉ.शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूँजती हैं" नाटक में धार्मिक भावना को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। तवाड़ से आयी रिफ्यूज़ी लड़की को ऐंग्लो इंडियन लड़की रोज़ धर्म की तालीम दिए बिना बड़ा करना चाहती है। क्योंकि उनके दृष्टि से हिंदू धर्म ही संसार का महत्वपूर्ण धर्म है। मगर धर्मगुरू पिंटो की दृष्टि से आजकल धर्म और शत्रु का अर्थ बदल गया है। इसलिए वह दो धर्म मानते हैं। वे दोनों एक दूसरे के बिल्कुल विरोधी है। एक धर्म नीति, दूसरा अनीति, एक इन्सान, दूसरा शैतान। और जो इनके विरोधी है वह हमारे शत्रु हैं। इसलिए चीनी हमले को सही तरह से समझकर उससे बचने के लिए अध्यात्मिक शक्ति की तरफ मूड़ना चाहिए। इस तरह धर्मगुरू पिण्टो ने धर्म की नई व्याख्या की है।[9]

मिशन में रहनेवाले बच्चे हमले के समय अपना चर्च छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। इन्सान को शैतान ने हमेशा नीचा दिखाया है इसलिए उससे ड़रकर बच्चे भागना नहीं चाहते। यहाँ बच्चों के मन में होनेवाला चर्च प्रेम दिखाई देता है।[10]

ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित "नेफा की एक शाम" नाटक में आदमी के मन में भगवान के प्रति होनेवाली श्रध्दा स्पष्ट हुई है। चीनी सैनिकों ने तवाँग पर हमला करके सभी लोगों को खत्म किया। चीनी सैनिक खाने को कुछ न कुछ मिलेगा इस इरादे से मजबूत दरवाजों को तोड़कर मठ में घुसे। धर्मगुरू बापू लामा के समाने उनके पूरे परिवार को नष्ट किया मगर उन पर कोई असर नहीं हुआ। लेकिन जैसे ही बुध्द की मूर्ति तोड़ना चीनी सैनिकों ने प्रारम्भ किया वैसेही बापू लामा की आँखों से आँसू बहने लगे। यहाँ बापू लामा की भगवान या धर्म के प्रति अटूट श्रध्दा दिखाई देती है।[11]

दोनी पोलो ने एक नया दो पैरोंवाला दरिन्दा पैदा किया है। जो आगे-आगे मातई के झोपड़ी तक आ रहा है ऐसे सरदार गोगो ने मातई को बताया। वे दरिन्दे झोपड़ी, गाँव, पहाड़, नदियों को हड़प कर रहे हैं। यह सुनकर मातई दोनी पोलो से प्रार्थना करती है कि मुझपर सौ बिजलियाँ गिरा दे ताकि दरिन्दों के हाथ न लग सके।

राजकुमार लिखित "हाजीपीर का दर्रा" नाटक में सच्चा सैनिक युध्द के लिए तैयार नहीं होता मगर उसे युध्द मजबुरन करना पड़ता है। पाकिस्तानी मुजाहिद नूर खाँ पाकिस्तानी कप्तान के आदेशानुरूप कश्मीर में होनेवाली एक बस्ती को आग लगाकर आ गया है। अभी तक उनके सामने चीखते चिल्लाते कश्मीरी लोग दिखाई दे रहे हैं। इसलिए साधारण आदमी के समान मौत आने के पहले नूर खाँ पैगंबर से अपने गुनाहों के लिए माफी माँगना चाहता है। यहाँ नूर खाँ की धार्मिक दृष्टि दिखाई देती है। नूर खाँ धर्म के प्रति आस्था रखनेवाला पाकिस्तानी मुजाहिद है।[12]

परोपकाराय पुण्याय

भारतीय संस्कृति के विविध आदर्शों में एक आदर्श परोपकार करना है और इस परोपकार को ही पुण्य कहा गया है। भारतीय आदमी के मन पर सेवा

भाव का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। दुश्मन की सेवा करते समय भी वह पीछे नहीं हटते। जिसका वर्णन डॉ.शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूँजती हैं" नाटक में एंग्लो इंडियन लड़की रोज़ जीप को छोड़कर बोमदि ला में होनेवाले गिरजाघर की तरफ चली जाती है। वहाँ घायल रूप में पिता ओब्राएन मिलते हैं। एक वृध्द आदमी सबेरे से घायल आदमियों को ढोने का कार्य कर रहा है। फिर भी वह थका नहीं। वह आदमी रोज के पिता को जीप तक लेकर आ जाता है। रोज ने उसे पाँच रू. भेंट देना चाहा। मगर उन्होंने इन्कार किया। तभी वृध्द का वक्तव्य- "मेम साहब, मैं गरीब जरूर हूँ लेकिन इन्सान हूँ। कुछ और नहीं कर सकता तो घायलों की इतनी सेवा का ही पुन्न सही।"[13] इससे वृध्द आदमी की परोपकार की वृत्ती दिखायी देती है।

रोज के घायल पिता ओब्राएन पानी के लिए तरस रहे हैं। नजदिक बैठे आदिवासी युवती क्यूला से पानी लाने के लिए बरतन की माँग करते ही वह स्वयं जंगल में जाकर पानी लाकर देती है। यहाँ भारतीय नारी क्यूला की परोपकार भावना दिखायी देती है।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित "नेफा की एक शाम" में भारतीय मातई जखमी, चीनी सैनिक वांगचू के माथे से बहते हुए खून को बंद करने के लिए जड़ी बूटी का रस लगाती है। पैर में घुसे हुए बारूद के टुकड़े की तरफ देखकर चीनी जासूस वांगचू का वक्तव्य - "मुझे बचा लो, बूढी माँ....मुझे बचा लो!.....मैं तुम्हारा अहसान जिंदगी-भर नहीं भूलूँगा।"[14]

तभी मातई छुरी के सहारे पैर में घुसा बारूद का टुकड़ा निकालती है जिसके कारण उसे थोडा आराम मिला। इसप्रकार मातई शत्रु की सेवा शुश्रुषा करके अपने संस्कृति को निभाती है।

डॉ.रामकुमार वर्मा लिखित "जय बांड़ला" नाटक में इन्सान के फर्ज को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। सामने मोटर बोट देखते ही गोलियों की कि वर्षा में छ. बरस की लड़की सकीना की जान बचानेवाला बलूची सैनिक फीरोज सौ जख्मी

हो जाता है। मुक्ति फौज का सैनिक शिशिर दा पर उसने बच्ची की जान बचाकर एहसान किया था। इसलिए शिशिर दा मरहम पट्टी करता है। दुश्मन की मलम पट्टी करते देखकर बलूची फीरोज खाँ ने तुम कितने अच्छे हो ऐसे कहा। उस समय इन्सान का धर्म शिशिर दा के शब्दों में - "आप हमारे दुश्मन नहीं हैं। घायल मनुष्य की सेवा करना हमारा धर्म है।"[15] इस सेवा भाव में भारत की विशिष्टता सहज ही दृष्टिगोचर होती है।

सुधारानी बंग कन्या है। बाड़ला देश की स्वतंत्रता के युध्द के समय हमारे क्षेत्र में यदि पाकिस्तान का सिपाही भी घायल हो तो उनकी सेवा करने के लिए वह तैयार है। क्योंकि मुक्ति फौज के कार्य में वह हाथ बँटाना चाहती है।

विविधादर्श

विवेच्य नाटकों में विविध आदर्शों को रेखांकित करने का प्रयास नाटककार ने किया है। "घाटियाँ गूँजती हैं" का एक पात्र भारतीय मुकुल जनता के हित के लिए लोगों में परचे बाँट रहा हैं। सरकार बदलने की कोशिश की तो जनता हँसते हुए उसका स्वीकार करेगी। क्योंकि मूर्ख होने के कारण जनता कुछ नहीं समझेगी ऐसा कहते ही भारतीय रिपोरटर विवेक ने बताया कि वह अपके समान चोर डाकुओं के तलवे नहीं चाटती या विश्वासघात नहीं करती। ये बातें मुकुल सुनने के लिए तैयार नहीं। तभी हिंदुस्तान गद्दार नहीं यह रिपोरटर विवेक के शब्दों में - "मैं चूप हो जाऊँगा मिस्टर, मगर एक बात गाँठ में बाँध लो, यह कोरिया और वियतनाम नहीं है, हिंदुस्थान है चीन को भी मनुष्यता और सत्य का पाठ पढ़ानेवाला हिंदुस्तान!"[16] यहाँ पूरे हिन्दुस्तान का ही आदर्श दिखाई देता है।

"नेफा की एक शाम" में आदर्श पात्रों का वर्णन किया है। लड़ाई के दाँव पेच आदिवासी गुरिल्ला सरदार गोगो को मालूम है। दुश्मन हमला करते-करते आगे बढ़ रहा है यह देखकर आदिवासी लोगों ने गोगो को अपना सरदार चुन लिया। शीकाकाई ने सुनाई हुई दर्द भरी कहानी पर सरदार गोगो तुरन्त विश्वास रखने के लिए तैयार नहीं है। तुरन्त वह किसी पर यकीन नहीं रखता। तभी गोगो का

आदर्शवादी मंतव्य देखिए - "नहीं। किसी पर फौरन यकीन करना मेरे तजुर्बे ने मुझे नहीं सिखाया। मैं मानता हूँ कि इस लड़की पर वह सब कुछ बीता है जो इसने बतलाया है। मुझे हमदर्दी है, इससे ज्यादा कुछ भी नहीं।"[17] इसमें सन्देह नहीं कि किसी भी परिस्थिति में संयम से रहना भारतीय आदर्श की एक विशेषता है चाहे वह युध्द प्रसंग ही क्यों न हो ?

चीनी जासूस वांगचू आदिवासी गुरिल्ला सरदार गोगो के प्रति दोस्ती का हाथ बढ़ाता है। मगर चीनियों के प्रति उसके मन में विद्रोह की भावना होने के कारण वह कहता है कि खूनी हाथों से अच्छे हाथ कभी नहीं मिलते। सभी भारतीय सैनिक अपोंग पिकर और जड़ी-बूटी खाकर अपना उदरनिर्वाह कर रहे हैं। मातई का छोटा लड़का देवल की राह देखनेवाले गोगो को मातई अपोंग पीने के लिए कहती है तभी स्थितप्रज्ञ गोगो का मंतव्य - "हाँ, मातई। रोमी के पेड़ की जड़ खाई है। सच कहता हूँ, मातई, गले तक पेट भर आया है।"[18] यहाँ गोगो का संतुष्ट भाव दिखायी देता है।

डॉ.शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूँजती हैं" नाटक में आदर्श को महत्वपूर्ण स्थान दे दिया है। आदमी के पास आदर्श होने पर ही वह ऊँचाई के स्थान पर पहुँच सकता है। रिपोर्टर विवेक कुमार रॉय गुप्तचर विभाग के अधिकारी कैप्टन मोहन सिंह को युध्द क्षेत्र जाने का परमिट माँगता है। मगर उसने देने से इन्कार किया। ऐंग्लो इंडियन लड़की रोज़ को बोमदि ला पिता ओब्राएन्स के पास जाने का तुरन्त परमिट दे देता है क्योंकि विश्वास को सन्देह और सन्देह को विश्वास मानकर आगे बढ़ना ही उनका काम है। यहाँ कैप्टन का परमिट देने का आदर्श दिखाई देता है।

रिपोरटर विवेक तेजपुर से बोमदि ला की तरफ रवाना हो जाता है, तभी ऐसे महसूस होता है कि जंगल, पहाड़, खेत, छाया सन्नाटा सभी भयानक तूफ़ान की प्रतिक्षा कर रहे हैं। भयभीत हुए विवेक के मन में किसी भी प्रकार का डर

नहीं। मनुष्य को बड़े-से-बड़े तूफ़ान में डाल देने के बावजूद एक दो क्षण वह लड़खड़ाता है, मगर बाद में हवा की गति के समान उड़ता है। बेबस पत्ते की तरह बवंडर में टूक-टूक होना उसका स्वभाव नहीं इसलिए मानव को शक्तिशाली पंछी कहा है।[19]

ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित "नेफा की एक शाम" में त्याग भावना का चित्रांकन किया है। कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है तभी उसे सफलता मिलती है। सरदार गोगो के पुल उड़ाने की योजना में सैनिक देवल के साथ उनकी प्रेयसी शीकाकाई भी पहाड़ी की तरफ जाने के लिए तैयार है। मगर गोगो के आदेशानुरूप उसे ले जाने से देवल इन्कार करता है। यहाँ देवल और शीकाकाई पति-पत्नीयों की त्यागी प्रवृत्ति का आदर्श दिखायी देता है।

"नेफा की एक शाम" नाटक में पुल उड़ाते समय मातई का बड़ा बेटा जख्मी हो जाता है। पूरे शरीर में गोलियाँ लगने के कारण वह तकलीफ सहते हुए जिन्दा नहीं रहना चाहता। जख्मों में अटकी हुई जान को माँ मातई को मारने के लिए कहता है। उस समय मातई के शब्दों में त्याग भावना दिखाई देती है "आज तक जो किसी माता ने अपने बेटे के साथ नहीं किया, वह मैं तेरे साथ करूँगी। तू आराम से मरेगा, मेरे लाल····तू आराम से मरेगा।"[20] दुश्मन भले ही गोलियाँ उड़ाता रहे और अमानुषता बढाता रहे लेकिन मातई अपने बेटों की मृत्यु दुश्मनों से हो, ऐसा नहीं चाहती है बड़ा बेटा नीमों जब इस युध्द में चीनियों के हमले से घायल हो जाता है और उसे दुःख सहा नहीं जाता है तब मातई उसे अपने हाथ में बंदूक लेकर मारने के लिए निशाना चलाने के लिए तत्पर होती है इतने में आहत नीमों स्वयं ही मर जाता है। मातई का यह बड़ा बेटा भारत की हिफ़ाजत के लिए लड़ते-लड़ते अपने प्राण न्योछावर करता है यही भारतीयों का आदर्श है। राष्ट्र के लिए मातई के बेटे का प्राणार्पण करना भारतीय आदर्श का उच्चांक है।

धर्मनिरपेक्षता

भारतीय संविधान के अनुसार भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। डॉ.शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूँजती हैं" नाटक में पर्वतराज हिमालय के पास होनेवाले बदरी केदार नामक जो तीर्थक्षेत्र है वहाँ हर बरस भारतीय यात्री बदरी केदार का गुणगान गाते हुए चले जाते हैं। आज भी सभी धर्म के भारतीय लोग बदरी केदार की यात्रा के लिए जाते हुए दिखाई देते हैं। यहाँ भारतीयों के मन में होनेवाला धर्मनिरपेक्ष भाव दिखाई देता है।

राजकुमार लिखित "हाजीपीर का दर्रा" नाटक में कश्मीर/हाजीपीर के दर्रे को हासिल करने के लिए पाकिस्तानी मुजाहिद लड़ रहे हैं। पाकिस्तानी मुजाहिद कश्मीर में होनेवाले अपने ही मुस्लिम भाईयों पर अत्याचर कर रहे हैं। तभी भारतीय कश्मीर को अपना ही एक हिस्सा समझकर मुजाहिदों का सामना करने के लिए चले जाते हैं। उस समय कश्मीरी मुसलमान पाकिस्तानी मुसलमानों की मदद न करते हुए संकट का सामना करते हुए हिंदू फौजियों की मदद करते है। यहाँ कश्मीर लोगों के मन में धर्मनिरपेक्षता का भाव दिखाई देता है।

कश्मीर में होनेवाला "हाजीपीर का दर्रा" मुसलमानों का बड़ा तीर्थक्षेत्र है। मगर मुसलमान तीर्थक्षेत्र होने के बाद भी हिंदू लोग उनकी पूजा करते दिखाई देते हैं। पाकिस्तानी जालिम खाँ शराब के नशे में हाजीपीर के मजार को लात मारकर थूकता है। इतना ही नहीं उसे नेस्तनाबूत करने के लिए कुदाल से दीवार पर चोट भी करता है। इससे स्पष्ट होता है कि मुसलमान होकर भी अपने धार्मिक तीर्थक्षेत्र के प्रति उसके मन में सहिष्णुता की भावना नहीं है। यहाँ यह दिखायी देता है कि हाजीपीर का दर्रा इस्लामी धर्म का प्रतीक है लेकिन यहाँ हिंदू श्रध्दाभाव से आकर नमस्कार करते हैं और उनके मन में जमी हुई धर्मनिरपेक्षता आप ही आप स्पष्ट हो जाती है तथापि नाटककार ने यह दर्शाया है कि पाकिस्तानी मुसलमान होकर भी कुछ लोग उस दर्रे के प्रति अपना अश्रध्दा भाव दिखाते हैं। जालिम खाँ दर्रे की मजार पर थूंककर शराब के नशे में धर्म का और धार्मिक भावना का मानो गला ही घोंटता है।

सांस्कृतिक विघटन

जिस प्रकार विवेच्य नाटकों में भारतीय संस्कृति के विविध आदर्श और तत्सम बातें दिखायी देती हैं वही सांस्कृतिक मूल्य विघटन के कुछ दर्शन भी होते है।

डॉ.शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूँजती हैं" नाटक में सांस्कृतिक विघटन का चित्रण किया है। रिपोरटर विवेक और एंग्लो इंडियन लड़की रोज़ बोमंदिला पहुँचने के पहले भारतीय गूँगा शीकू पहुँच गया है। यहाँ आने के लिए होनेवाले गुप्त मार्ग आदिवासियों को मालूम हैं। चीनी सैनिकों को रोकने का प्रयास करने के बाद भी गुप्त मार्ग से वह आगे बढ़ रहे हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अपने स्वार्थी भावना के लिए अपनी धरती या देश को बेचनेवाले इन्सान भी यहाँ रहते हैं। अपने सुख के लिए पूरे राष्ट्र को मौत के मुख में झोंक सकते हैं। ठीकरों की लोभ से देश की अनमोल आजादी का सौदा कर सकते हैं। आजकल भारतीय आदमी के पास होनेवाली आदर्श, एकता की भावना नष्ट हो रही हैं। लोग स्वार्थी बन गए हैं। यहाँ सांस्कृतिक विघटन दिखाई देता है।[21]

वस्तुतः शीकू गुप्त मार्ग से आने पर रिपोरटर विवेक और एंग्लो इंडियन लड़की रोज़ आपस में बातचीत करते हुए संशय प्रकट करते है कि शीकू की भाँति अन्य लोग भी गुप्त मार्ग से आते-जाते होंगे और ऐसे भारतीय दुश्मनों को गुप्त मार्ग की जानकारी देते होंगे ।

डॉ.शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूँजती हैं" नाटक में विश्व के श्रेष्ठ दार्शनिकों का चित्रांकन किया है। जादूगर का शिष्य चुन-चिह-चेह अद्भूत जादू का प्रयोग देखना चाहता है इसलिए जादूगर स्वर्ग की तीन महान आत्माओं से शिष्य को मिलाना चाहता है। वह निम्न है -

1. चीन का दार्शनिक - कन्फ्यूशिअस
2. भारत का दार्शनिक - बुध्द
3. रशिया का दार्शनिक - मार्क्स संस्कृति

शिक्षा भूले हुए चीनी युवक को कन्फ्यूशिअस सत्य, ईमानदारी और आचरण की शिक्षा फिर से याद दिलाना चाहता है। चीनियों में आजकल शैतान का वास हो गया है। इसलिए जादूगर को उपदेश कन्फ्यूशिअस के शब्दो में - "तुम्हारी राह बर्बर हूणों की राह है·····चीन की महान सभ्यता, संस्कृति और कला को कलंकित मत करो। अपने देश और जाती के सदियों से कमाए ज्ञान पर मत थूको। तुम उस प्राचीन वैभव पर मुँह उठाकर थूकोगे तो तुम्हारा चेहरा भी साफ नहीं बचेगा।"[22]

जिसके पास सत्य की आँख है उसे ही भारत का श्रेष्ठ दार्शनिक तथागत बुध्द दिखाई देता है। अंगुलिमाल जैसे राक्षसों ने बुध्द को पकड़ने के पश्चात जादूगर के समान अत्याचार नहीं किया। सभी के बारे में उनके मन में करूणा की भावना थी। कार्ल मार्क्स की आत्मा को बुध्द, कन्फ्यूशिअस को शिक्षा देने के लिए कहते ही अपने संस्कृति के बारे में उसने कहा कि मार्क्स परंपरा संस्कृति और सभ्यता का द्रोही नहीं। सत्य-असत्य के निर्णय में सभ्यता और शिष्टाचार को न झूठलाते हुए तानाशाही भाषा में बातें नहीं करनी चाहिए।[23]

जादूगर उपर्युक्त विश्व के श्रेष्ठ दार्शनिकों के विचारों से सहमत नहीं। बल्कि वह स्वयं को मार्क्सवादी, पंचशील और सह अस्तित्व का निर्माता मानकर युध्द को आवश्यक मानता है। इसलिए मार्क्स उसे गिरगिट कहता है। यह सुनते ही अपनी महत्ता के बारे में जादूगर का वक्तव्य - "हमारे पास चीन जैसा विशाल देश है, पैंसठ करोड़ जनता हैं। आज हम किसी से कम नहीं।····चीन वीर सम्राटों की भूमि है। हम शक्ति का महत्त्व और उसका उपयोग दोनों जानते हैं।"[24]

उपर्युक्त दार्शनिकों का उपदेश सुनकर जादूगर अपने शिष्य को उसे मारने के लिए कहता है। मगर बिना अपराध किए आदमी को शिष्य मारने के लिए तैयार नहीं यह देखकर शिष्य को प्रतिक्रियावादी समझता है और जादूगर उसे ही मारता है।

उपर्युक्त तीन दार्शनिकों के विचारों को जादूगर ठुकराता है और स्वयं अहंकारी बनकर साम्राज्यवादी रूख का स्वीकार करता है और चीन के साम्राज्यवाद को पुष्ठी करता है। और निरपराध शिष्य को मार डालता है यह उसकी अमानुषता सांस्कृतिक विघटन का ही द्योतक है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि -

1. विवेच्य नाटकों में नाटककार डॉ.शिवप्रसाद सिंह ने हिमालय के सांस्कृतिक महत्व को उजागर कर भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता और महत्ता व्यक्त की है। हिमालय का भौगोलिक संदर्भ संस्कृति की परिधि में उल्लेखनीय है।

2. विवेच्य नाटकों में हाजीपीर का दर्रा, बदरी केदार आदि तीर्थों का उल्लेख करते हुए उनका सांस्कृतिक संदर्भ नाटकों में दिखाई देता है लेकिन ये तीर्थक्षेत्र विदेशी आक्रमणों के कारण युध्दस्थल बन गए हैं और मानवता की जगह पशूता के केंद्र बन गये हैं।

3. विवेच्य नाटकों में लोगों के धर्म और धार्मिक विश्वासों पर भी प्रकाश डाला गया है।

4. परोपकार का महत्व दिखाते हुए भारतीयों के विविध आदर्शों को नाटककारों ने प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया है।

5. भारतीय संविधान के अनुसार भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है इस तत्व का भी नाटकों में निर्वाह हुआ है।

6. विवेच्य नाटकों में अपवादभूत जो सांस्कृतिक विघटन दर्शाया गया है वह भी अपना महत्व रखता है और भारतीयों को सतर्क रहने के लिए संकेत देता है।

7· विवेच्य नाटकों में यह भी दर्शाया गया है कि चीन किसी भी राष्ट्र के दार्शनिकों को महत्व नहीं देता है बल्कि अपनी तानाशाही को ही सबसे श्रेष्ठ समझता है। साम्राज्यवादी बनने की उनकी यह लालसा सांस्कृतिक विघटन ही है और अमानवीय ही है।

सं द र्भ

1· स्वतंत्रता और संस्कृति - सर्वपल्ली राधाकृष्णन, अनु· विश्वंभरनाथ त्रिपाठी पृ·43, सं·1955

2· रंगदर्शन - नेमिचंद्र जैन, पृ·9, तृ·संस्क·1993

3· महादेवी के श्रेष्ठ गीत - संपा·गंगाप्रसाद पाण्डेय, पृ·50, प्र·संस्क·1968

4· स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों का सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ·गजानन सुर्वे, पृ·13, प्र·संस्क·1987

5· घाटियाँ गूँजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·20, तृ·संस्क·1965

6· वही, पृ·46

7· वही, पृ·125-126

8· हाजीपीर का दर्रा - राजकुमार, पृ·18, दि·संस्क·1970

9· घाटियाँ गूँजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·42, तृ·संस्क·1965

10· वही, पृ·43

11· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·41, सप्त·संस्क·1980

12· हाजीपर का दर्रा - राजकुमार, पृ·38, दि·संस्क·1970

13· घाटियाँ गूँजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·65, तृ·संस्क·1965

14· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·50, सप्त·संस्क·1980

15· जय बांड़ला - डॉ·रामकुमार वर्मा, पृ·63, प्र·संस्क·1971

16· घाटियाँ गूँजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·105, तृ·संस्क·1965

17· नेफा की एक शाम-ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·44, सप्त·संस्क·1980

18· वही, पृ·81

19· घाटियाँ गूँजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·52, तृ·संस्क·1965

20· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री, पृ·126, सप्त·संस्क·1980

21· घाटियाँ गूँजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·52, तृ·संस्क·1965

22· वही, पृ·59

23· वही, पृ·61

24· वही, पृ·62